# ईदु मिश्मी लोक साहित्य में जीवन-मूल्य

रीना कुमारी राय
आशा मिमी

समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का होना अनिवार्य हैं। जीवन मूल्य एक ऐसा तत्त्व है जो हर व्यक्ति के जीवन में आवश्यक होता है। इन मूल्यों के आधार पर मनुष्य जीवनयापन करना सीखता है। ईदु मिश्मी अरुणाचल प्रदेश की मिश्मी जनजाति की एक उप जनजाति है। इनकी अपनी कोई लिपि न होने के कारण इनका साहित्य मौखिक रूप में उपलब्ध है। हिंदी लोक साहित्य की तरह ईदु मिश्मी लोक साहित्य में लोक कथा, लोक गीत, लोक गाथा, लोक-नाट्य, लोक सुभाषित उपलब्ध है। इनके लोक साहित्य में जीवन संबंधी मूल्य देखे जा सकते हैं। "जीवन मूल्य ही ऐसे तत्त्व हैं जो मनुष्य को उचित-अनुचित संबंधी निर्णय शक्ति-प्रदान कर उसके जीवन को संतुलित बनाते हैं। संतुलन की अवस्था में ही मनुष्य अपने विकास के मार्ग का अन्वेषण कर पाता है।"[1] अर्थात मनुष्य का जीवन विसंगतियों और संघर्षों से भरा हुआ है, उसे नित्य प्रतिदिन उन संघर्षों से सामना करना पड़ता है जिनमें उसे कभी सफलता प्राप्त होती है तो कभी असफलता, लेकिन इन्हीं संघर्षों से वह जीवन के असल मूल्य को समझता है। इन सब पद्धतियों से मनुष्य को किस प्रकार जीवनयापन करना है, वह सीखता है। मनुष्य अपने अनुभव से ही अपनी पीढ़ी को इन सब जीवन आधारित मूल्यों से अवगत कराता है ताकि उसे किस तरह जीवन जीना चाहिए और क्या उसके हित में हैं और क्या अहित में; को भली-भांति जान सके। वस्तुतः जीवन का अनुभव ही मनुष्य को जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

लोक (सामान्य जनसमूह) समाज का वह हिस्सा है, जो आभिजात्य और शास्त्रीयता के घेरे से मुक्त होता है। यह खास वर्ग को सहज प्राप्त सुख-सुविधाओं से वंचित होता है। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक साहित्य के संबंध में कहा है कि "लोक साहित्य का विस्तार अत्यंत व्यापक है। साधारण जनता जिन शब्दों में गाती है, रोती है, हँसती है, खेलती है उन सब को लोक साहित्य के अंतर्गत रखा जा सकता है।"[2] डॉ. सत्येन्द्र ने लोक साहित्य को परिभाषित करते हुए उसे तीन भागों में विभाजित किया है- "लोक साहित्य के अंतर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है जिसमें-

1. आदिम मानस के अवशेष उपलब्ध हों।
2. परंपरागत मौखिक क्रम से उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो जिसे किसी की कृति न कहा जा सके, जिसे श्रुति ही माना जाता हो, और जो लोक मानस की प्रवृत्ति में समायी हुई हो।
3. कृतित्व हो किंतु वह लोक-मानस के सामान्य तत्त्वों से युक्त हो कि उसके किसी व्यक्तित्व के साथ संबद्ध रहते हुए भी, लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करे।"[3]

उपर्युक्त परिभाषा से यह समझा जा सकता है कि लोक साहित्य लोक द्वारा निर्मित वह साहित्य है, जिसमें लोक अपनी भावनाओं और अनुभूतियों को मौखिक रूप में एक-दूसरे के समक्ष अभिव्यक्त करता आ रहा है। यह मूलतः श्रुति पर आधारित होता है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक श्रुति के माध्यम से आगे बढ़ता या वाचिक रूप में हस्तांतरित होता है।

अरुणाचल प्रदेश भारत के उत्तर-पूर्व में बसा है, जो उत्तर पूर्व के अन्य राज्यों से क्षेत्रफल की तुलना में सबसे बड़ा राज्य है। अरुणाचल में कुल 28 जिले हैं, जिसमें पापुमपारे, ईस्ट सियांग, दिबांग वैली, लोअर दिबांग वैली, सुबंसीरी, ईस्ट कमेंग, वेस्ट कमेंग, लोहित, नामसाई, चांगलांग, लॉगदिङ, तवांग इत्यादि हैं। प्राकृतिक सौंदर्य के साथ इसे विविधताओं का राज्य भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ कई जनजाति और उप जनजातियाँ एक साथ निवास करती हैं। इस प्रदेश में कुल 26 प्रमुख जनजातियों के साथ सौ से भी अधिक उपजनजातियाँ हैं। प्रमुख जनजातियों में मिश्मी, तांगसा, नोक्टे, न्यीशी, आदी, तागिन, मोनपा, मिजी, खामबा इत्यादि हैं। इन सभी जनजातियों की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं, जो इनकी पहचान हैं। प्रत्येक जनजातियों में सामाजिक और सांस्कृतिक भिन्नताओं के बावजूद भी उनमें कहीं न कहीं समानता नजर आती है जो उनको एक साथ जोड़ने का काम करती है। वर्तमान समय में अधिकतर जनजातियाँ बौद्ध, ईसाई और हिंदू धर्म से जुड़े हुए हैं। अलग-अलग धर्मों से जुड़े होने के बावजूद भी वे अपने पूर्वज और प्रकृति की उपासना करते हैं। अरुणाचल प्रदेश की जनजातियाँ प्राचीन काल से प्रकृति की उपासना करती आ रही हैं। प्रकृति के साथ उनका संबंध अधिक गहरा है।

मिश्मी जनजाति अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में से एक है। यह जनजाति मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित है–ईदु मिश्मी, दिगारु मिश्मी और मिजु मिश्मी। एक ही जनजाति होने के बावजूद भी इनमें भिन्नताएँ नजर आती हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ईदु मिश्मी, दिगारु और मिजु मिश्मी से भिन्न है, किंतु ईदु मिश्मी और दिगारु मिश्मी की बोलियों में समानता देखने को मिलती है, जबकि मिजु मिश्मी की बोली उपर्युक्त जनजातियों से भिन्न है। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से दिगारु और मिजु मिश्मी में समानता है। यह दोनों जनजातियाँ लोहित और अंजाव जिले में निवास करती हैं। ईदु मिश्मी मिश्मी जनजाति की एक उपजनजाति है, जो दिबांग वैली, लोअर दिबांग वैली, लोहित और सियांग के कुछ क्षेत्रों में निवास करती हैं। मिजू और दिगारु दोनों जनजातियों से ईदु मिश्मी जनजाति भिन्न है। यह जनजाति चीन और भारत में अरुणाचल प्रदेश में निवास करती हैं। अरुणाचल में यह जनजाति मूलतः दिबांग वैली, लोअर दिबांग वैली, लोहित और पूर्वी सियांग के कुछ गाँव में निवास करती हैं। ईदु मिश्मी जनजाति की अपनी कोई लिपि न होने के कारण उनका जीवन और इतिहास रहस्यों में उलझा हुआ है। इस संबंध में जो भी जानकारी आज तक उपलब्ध है, वह सब लोक साहित्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। ईदु मिश्मी का मूल उद्गम कहाँ से हुआ, इस पर लोगों में एकमत नहीं हैं। कोई उनको तिब्बत (चीन) से विस्थापित होकर आए मानते हैं तो कोई बर्मा या अबोर हिल्स से विस्थापित मानते हैं। मनुष्य के जीवन में समाज का होना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। समाज के बिना व्यक्ति का जीवन अधूरा होता है। व्यक्ति से परिवार बनता है और परिवारों के समूह से समाज निर्मित होता है इसलिए परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई मानी जाती है। समाज और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य के लिए संस्कृति वह साधन है जिसके द्वारा वह अपनी पहचान और अस्तित्व को बनाए रखता है। संस्कृति के जरिए ही किसी भी समाज को जाना जा सकता है। संस्कृति ही मनुष्य की पहचान होती है। त्यौहार, नृत्य, अनुष्ठान, रीति-रिवाज, विश्वास यह सभी संस्कृति के अंग हैं। संस्कृति ही मनुष्य को एक साथ जोड़कर रखने का काम करती है। ईदु मिश्मी समाज भी अपनी संस्कृति को सुरक्षित करते आ रहे हैं। ईदु मिश्मी लोक साहित्य जीवन मूल्यों से भरपूर है,

जिसमें पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन के महत्त्व को देखा जा सकता है। इन मूल्यों के आधार पर ही इस जनजाति के जीवन दर्शन को देखा जाता है।

**सामाजिक मूल्य**

ईदु मिश्मी समाज मिलकर जीवनयापन करते हैं। हर अनुष्ठान, त्यौहार, विभिन्न क्रिया-कलाप वे एक साथ मिल-जुलकर करते हैं। इस जनजाति की लोक कथाओं में सामाजिक मूल्यों से संबंधित कई कथाएँ प्रचलित हैं, जिसमें समाज के महत्त्व को दिखाया गया है। इन मूल्यों के आधार पर ही मनुष्य अपना जीवन यापन करता है और इसके द्वारा ही मनुष्य सही और गलत का निर्णय लेने में सक्षम होता है। परिवार के बिना व्यक्ति का जीवन निरर्थक है। मनुष्य के जीवन में कई गतिविधियाँ बदलती रहती हैं। मनुष्य को कभी सुख तो कभी दुख को धारण कर जीवनयापन करना पड़ता है। उस समय परिवार ही मात्र उनके पास रह जाते हैं जो हर परिस्थिति में उनका साथ देता है। ईदु मिश्मी समाज में परिवार का अत्यधिक महत्त्व होता है। परिवार ही मनुष्य को एक साथ बांध कर रखने का काम करता है।

1. मातृ-प्रेम-

परिवार में एक बच्चे का सबसे पहला रिश्ता माँ के साथ ही होता है। माँ और बच्चे का संबंध जब वह पेट में होता है, तभी से जुड़ जाता है। जन्म के पश्चात जब उसे भूख लगती है तब माँ ही उसे दूध पिलाकर उसकी भूख को शांत करती है। इस तरह बच्चा धीरे-धीरे समझ जाता है कि माँ ही उसकी हर जरूरत को पूर्ण कर सकती है। इसलिए ईदु मिश्मी समाज में बच्चे का स्नेह सबसे अधिक माँ के साथ ही देखा जा सकता है। यह उनके लोक कथाओं में भी दिखाई पड़ता है। जैसे सिनेरु से संबंधित लोक कथा ईदु मिश्मी जनजाति में प्रचलित है। इस कथा में सिनेरु का उसकी माँ के प्रति जो प्रेम था वह दिखाई देता है। जब उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है तब वह विचलित हो उठता है और विलाप करने लगता है। अनुष्ठान द्वारा वह अपनी माँ को जीवित करने का पूरा प्रयास करता है। प्रस्तुत कथा में मातृत्व प्रेम के मूल्य को दर्शाया गया है।

2. बहन-बहन का प्रेम

अन्य पितृसत्तात्मक समाज की तरह ईदु मिश्मी समाज में भी स्त्रियों को हमेशा पुरुष से नीचे दर्जे का माना जाता है, जिस कारण स्त्रियों को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। जिस स्त्री के साथ पुरुष का साया न हो उसे समाज में कोई हक नहीं दिया जाता है। उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। इससे संबंधित जोमबा नामक लोक कथा ईदु मिश्मी जनजाति में प्रचलित है। जब जोमब को उसके ससुराल द्वारा त्याग दिया जाता है, उस समय उसके अपने घर वाले भी उसका साथ नहीं देते हैं। वह जीवन से हार मान जाती है तब उसकी अपनी बहन उस समय उसका साथ देने के लिए आगे आती है। उसकी बहन जीवन के अंतिम समय तक उसके साथ रहती है। इस कथा में बहन के मूल्य को देखा जा सकता है।

**सांस्कृतिक मूल्य-**

जिस तरह समाज मनुष्य जाति के जीवन का अभिन्न अंग है, वैसे ही संस्कृति भी मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। संस्कृति ही एक समाज को दूसरे समाज से अलग करती है। सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा एक बेहतर समाज की स्थापना की जा सकती है। ईदु मिश्मी लोक कथाओं में सांस्कृतिक मूल्यों से संबंधित कथाएँ प्रचलित हैं। जहाँ संस्कृति के महत्त्व को पहचाना जा सकता है।

**त्यौहार संबंधी मूल्य-**

त्यौहार मनुष्य जाति की पहचान है। त्यौहार के माध्यम से लोग एक एक दूसरे से जुडते हैं और एक साथ खुशियाँ मनाते हैं, जिसमें कई जीवन मूल्य उभरकर सामने आते हैं। 'रेह' ईदु मिश्मी का मुख्य त्यौहार है जिसमें इस त्यौहार के महत्त्व को देखा जा सकता है। इससे संबंधित लोक कथा इस जनजाति में प्रचलित है, जहाँ यह पता चलता है कि इस त्यौहार का आरंभ सर्वप्रथम 'अपिजु मेंगा' द्वारा किया गया था। यह त्यौहार मनुष्य को स्वार्थ और लालच से दूर रहने की प्रेरणा देता है। इस त्यौहार के द्वारा यह सीख भी मिलती है कि हमें हमेशा एक दूसरे की मदद करनी चाहिए और मिल जुलकर रहना चाहिए। इस त्यौहार के कई उद्देश्य हैं, जैसे-

- मनुष्य को निस्वार्थ होकर लोगों की मदद करनी चाहिए।
- मनुष्य को लालच नहीं रखना चाहिए।
- हमेशा दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

**विवाह संबंधी मूल्य**

विवाह स्त्री और पुरुष दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है, जो समाज की सबसे छोटी इकाई के रूप में शुरू होती है। यह जीवन में सातत्य को बनाए रखने के लिए जरूरी है। एक दांपत्य जीवन समाज को यह प्रेरित करता है कि किसी भी परिस्थिति में हमें एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। जीवन के पड़ाव में एक ऐसा समय आता है जब हमें किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत पड़ती है जो हर समय हमारा साथ दे। अपने जीवन से जुड़ी हर बात को एक-दूसरे के समक्ष व्यक्त कर सके। ईदु मिश्मी समाज में भी विवाह का अत्यंत महत्त्व है। विवाह न होने पर व्यक्ति का जीवन अधूरा होता है। यह अधूरापन 'नारू तो वूजी' नामक लोक गीत के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। इस गीत में एक युवती अपने अकेलेपन को अभिव्यक्त करती नजर आती है :-

आबी यू गादा दो थ्रू हाना ऊ ऊ ऊ,
आंगो प्रागदा होला हाना ऊ ऊ ऊ,
आ आ गा दा होजा गादा ऊ ऊ ऊ,
यिन्दो प्राबिदो एयांपा लेबा होला हाना ऊ ऊ ऊ,
नारू तो ऊजी ऊ ऊ ऊ,
सोनजोमबो ऊजी ऊ ऊ ऊ,
आपुथ्रो यिबेवे ऊ ऊ ऊ,
एबाको यिबेवे ऊ ऊ ऊ,
सोनजोमबो ऊजी ऊ ऊ ऊ।

**भावार्थ :-**

इस गीत में कुँवारी युवती अपनी दशा का वर्णन करती हुई कहती है कि मैं सभी कार्य में निपुण हूँ। मैं अभी कपड़े बुन रही हूँ। इस बात को पूरे गाँव में फैला दो ताकि मेरे लिए कोई विवाह का प्रस्ताव लेकर आए, अन्यथा मेरा जीवन व्यर्थ हो जाएगा। मुझे डर है कि कहीं मेरा जीवन खेत-खलिहानों की रखवाली तक ही सीमित न रह जाए। प्रस्तुत गीत में युवती अपनी अकेलेपन को दर्शाती है।

मनुष्य विकास की ओर जैसे-जैसे अग्रसर होता है, वैसे-वैसे वह अपनी पुरानी परंपराओं को पीछे छोड़ता चला जाता है किंतु प्रगति ही मनुष्य का आधार है। ऐसे में व्यक्ति को रूढ़िवादी परंपराओं को छोड़कर मनुष्य हित के लिए जो आवश्यक है, उनको ग्रहण कर आगे बढ़ना चाहिए। मनुष्य के जीवन में मूल्यों का होना आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं से वह जीने की प्रेरणा लेता है। जीवन मूल्य मनुष्य को सफलता की ओर ले जाने का पथ प्रदर्शित करता है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके जीवन मूल्यों के आधार पर निर्धारित की जाती है। जीवन मूल्य ही व्यक्ति को सकारात्मक बनाता है। मूल्यहीन व्यक्ति का जीवन निरर्थक है। वह जीवन के किसी भी पड़ाव के लिए सक्षम नहीं होता है। ईदु मिश्मी लोक साहित्य में जीवन मूल्य संबंधी विशेषताओं को देखा जा सकता है। मातृत्व प्रेम के महत्त्व को सिनेरु की कथा के द्वारा देखा जा सकता है। माँ का होना जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण है, यह इस कथा के द्वारा पता चलता है। समाज में हर एक रिश्ता अटूट होता है। यह हम जोमबा के गीत में देख सकते हैं, जहाँ दो बहनों के प्रेम को दर्शाया गया है। ईदु मिश्मी लोक साहित्य में त्यौहारों के महत्त्व को दर्शाया गया है और जिसमें त्यौहारों के द्वारा मनुष्य को स्वार्थहीन जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। विवाह प्रणाली मनुष्य जीवन के लिए क्यों आवश्यक है, इसका वर्णन भी ईदु मिश्मी लोक गीतों में प्राप्त होता है।

**सहायक ग्रंथ सूची**


1. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा. लि. के. पी. कक्कर रोड, इलाहाबाद
2. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण: 2014
3. गणपतिचंद्र गुप्त, साहित्यिक निबंध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण :2015
4. धर्मपाल मैनी, मानव मूल्य व्याख्या कोश: भाग 5 (आधुनिक मूल्य), किताब घर, नई दिल्ली, संस्करण 2009
5. धर्मराज सिंह, अरुणाचल की गालो जनजाति और उसकी सामाजिक व्यवस्था, अरुणाचल नागरी संस्थान, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, संस्करण : 2001
6. धर्मराज सिंह, अरुणाचल की जनजातियाँ और ऐतिहासिक स्थान, डायरेक्टर ऑफ रिसर्च, अरुणाचल प्रदेश, ईटानगर, प्रकाशन: 1994
7. माजिद मेवाती, मेवाती लोक गीतों में समाज और संस्कृति, नेहा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण : 2010
8. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर (राज.), संस्करण: 2006
9. हरीशकुमार शर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक-संस्कृति, जासमिन पब्लिकेशन, दिल्ली, संस्करण : 2013
10. Mishimbu Miri, Revelations from Idu Mishmi hymns, RIWATCH (Research Institute of Worlds Ancient Traditions Cultures and Heritage). Arunachal Pradesh. 2018.
11. Dr. Razzeko Dele, Idu Mishmi Shamanic Funeral Ritual Ya, Bookwell, Delhi, Published in 2018.


*(**लेखकीय परिचय** : रीना कुमारी राय नागालैंड विश्वविद्यालय, नागालैंड के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं। इससे पूर्व आप अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज़, नामसाई, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में अतिथि सहायक प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कार्य कर चुकी हैं। मोबा: 9954416737, ई-मेल: rinarai945@gmail.com/ आशा मिमी, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं। इससे पूर्व आप अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज़, नामसाई, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में अतिथि सहायक प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कार्य कर चुकी हैं।*

*मोबा: 8119826580, ई-मेल : mimiasha1994@gmail.com )*